vinetur

# जर्मनी में वाइन की मंदी ने Habitat Weine को दिवालिया प्रक्रिया में धकेला

पैलाटिनेट की सहकारी संस्था अस्थायी प्रशासन के तहत बचा हुआ स्टॉक बेचती रहेगी, लेकिन उसका दीर्घकालिक भविष्य अभी अनिश्चित है।

शुक्रवार, 2 अक्टूबर 2026



जर्मनी के पैलाटिनेट क्षेत्र की एक वाइन सहकारी संस्था ने अस्थायी दिवालिया कार्यवाही शुरू कर दी है, जिससे देश के वाइन कारोबार पर पड़ रहे दबाव के संकेत और गहरे हुए हैं, क्योंकि उपभोक्ता मांग लगातार कमजोर हो रही है।

राइनलैंड-पैलाटिनेट स्थित Habitat Weine eG ने कहा कि उसे दिवालिया याचिका दायर करनी पड़ी, और जर्मन मीडिया रिपोर्टों तथा वाइनरी द्वारा पोस्ट की गई जानकारी के अनुसार, अगस्त के अंत में Bad Kreuznach की स्थानीय अदालत ने अस्थायी दिवालिया प्रशासन का आदेश दिया। मौजूदा वाइन स्टॉक की बिक्री फिलहाल जारी है, बशर्ते भंडार उपलब्ध रहे और अस्थायी दिवालिया प्रशासक लेनदेन को मंजूरी दे।

यह मामला वाइनमेकर Wolfgang Bender से जुड़ा है, जिनका परिवार पैलाटिनेट में चार पीढ़ियों से 100 से अधिक वर्षों

से अंगूर उगा रहा है। Habitat Weine खुद कहीं नया है। सहकारी संस्था 2021 में स्थापित हुई, जब Bender ने पारिवारिक कारोबार का पुनर्गठन किया और उसे एक अलग दिशा में ले जाने की कोशिश की।

यह मॉडल एक वाइनरी के लिए असामान्य था। Habitat Weine ने कहा कि व्यवसाय को इस तरह रचा गया था कि वह वस्तुतः अपने आप का स्वामी हो, न कि पारंपरिक निजी स्वामित्व वाली संपत्ति की तरह चले। सहकारी संस्था के अनुसार इसके लगभग 180 सदस्य हैं। मुनाफा सदस्यों में बांटने के बजाय कारोबार में ही रखा जाना था और उसका एक हिस्सा खेती की गई जमीन के आसपास संरक्षण उपायों पर खर्च होना था। Bender का ध्यान जैविक अंगूर-उत्पादन पर भी था।

सहकारी संस्था की वेबसाइट अब वित्तीय समस्याओं को खुलकर स्वीकार करती है। उसमें कहा गया है कि दिवालिया दाखिल करना आवश्यक था और बची हुई वाइन की बिक्री फिलहाल जारी रहेगी। अक्टूबर और नवंबर के लिए, और बाद में दिसंबर के लिए भी, कई सप्ताहांतों पर गोदाम बिक्री और चखने के आयोजन घोषित किए गए हैं।

आगे कारोबार का क्या होगा, यह अभी साफ नहीं है। अस्थायी दिवालिया प्रक्रिया का मतलब यह नहीं कि वाइनरी स्वतः बंद हो जाएगी, लेकिन यह संचालन पर पड़े वित्तीय दबाव की गंभीरता दिखाती है। फिलहाल तात्कालिक ध्यान बचा हुआ स्टॉक बेचने पर है।

यह याचिका जर्मन वाइन उत्पादकों के लिए समग्र रूप से एक कठिन दौर में आई है। जर्मनी में वाइन की खपत वर्षों से घट रही है। German Wine Institute के अनुसार, 16 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों ने 2024/25 वाइन वर्ष में प्रति व्यक्ति औसतन 21.5 लीटर वाइन पी, जबकि एक साल पहले यह 22.2 लीटर थी। उस अवधि में कुल खपत लगभग 15.3 मिलियन हेक्टोलिटर थी।

संस्थान ने इस गिरावट को बदलती उपभोक्ता आदतों, जीवन-यापन लागत बढ़ने और जनसांख्यिकीय बदलाव से जोड़ा है। उसने यह भी कहा कि यह कमजोरी 2025 में भी जारी रही, जब निजी घरों द्वारा खरीदी गई वाइन की मात्रा पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 7% घट गई।

उत्पादकों के लिए कम बिक्री बढ़ती लागत से टकरा रही है। ऊर्जा, श्रम और अन्य परिचालन खर्च बढ़े हैं, जबकि कई उपभोक्ता कीमत के प्रति अधिक संवेदनशील हो गए हैं। 2024 में जर्मन वाइन खुदरा स्तर पर औसतन 4.47 यूरो प्रति लीटर बिकी, जबकि आयातित वाइन 3.72 यूरो प्रति लीटर थी। घरेलू वाइन ने 2025 में मात्रा के हिसाब से अपनी बाजार हिस्सेदारी थोड़ी बढ़ाकर लगभग 42.6% कर ली, लेकिन उनकी बिक्री मात्रा फिर भी घटी।

Bender ने इन समस्याओं को अपनी कंपनी की अकेली विफलता नहीं, बल्कि एक व्यापक “वाइन संकट” का हिस्सा बताया है। जर्मन मीडिया में उद्धृत टिप्पणियों में उन्होंने क्षेत्र के वाइन उद्योग के भविष्य का बहुत कठोर आकलन दिया और कहा कि 20 साल में वहां शायद अंगूर की खेती बची ही न रहे।

इस नतीजे से बचने की उनकी कोशिशें मौजूदा दिवालिया याचिका से पहले शुरू हो गई थीं। संघर्षरत पारिवारिक कारोबार का नियंत्रण संभालने के बाद, उन्होंने सबसे पहले आधुनिकीकरण और जैविक उत्पादन का रास्ता अपनाया। कोविड-19 महामारी के दौरान, रेस्तरां बंद होने और कार्यक्रम रद्द होने से बिक्री के अहम चैनलों को झटका लगा। इसके बाद, उन्होंने वाइनरी को Habitat Weine सहकारी संस्था में बदल दिया, ताकि ऐसी संरचना बनाई जा सके जो व्यक्तिगत मालिकों पर कम निर्भर हो और पर्यावरणीय लक्ष्यों से अधिक करीब से जुड़ी हो।

लगता है यह रणनीति कमजोर मांग और बढ़ती लागत के संयुक्त दबाव को संतुलित करने के लिए पर्याप्त नहीं थी। Habitat Weine में आई मुश्किलें जर्मन वाइन उत्पादन के सामने एक व्यापक संरचनात्मक चुनौती को दर्शाती हैं, खासकर उन छोटे या स्वतंत्र उत्पादकों के लिए जो उच्च उत्पादन मानकों और सीमित मूल्य-निर्धारण शक्ति के साथ काम करने की कोशिश कर रहे हैं।

दबाव इतना बढ़ गया है कि राइनलैंड-पैलाटिनेट की राज्य सरकार अब उत्पादक अंगूर-भूमि को स्थायी रूप से हटाने के

लिए वित्तीय सहायता दे रही है। राज्य की योजना है कि जो उत्पादक बेलें उखाड़कर उन क्षेत्रों को हमेशा के लिए उत्पादन से बाहर कर दें, उन्हें प्रति हेक्टेयर 5,000 यूरो दिए जाएँ। आवेदन नवंबर में कृषि चैंबर के वाइन सूचना पोर्टल के माध्यम से खुलने की उम्मीद है।

इस उपाय का उद्देश्य आंशिक रूप से उत्पादन क्षमता कम करना और वाइन बाजार पर दबाव घटाना है। जो उत्पादक यह भुगतान लेंगे, वे साफ किए गए क्षेत्र को दोबारा लगाने का अधिकार खो देंगे। उनके खेतों में नई रोपाई के लिए मौजूदा परमिट भी रद्द कर दिए जाएँगे, और अगले 10 वर्षों तक वे नए परमिट के लिए आवेदन नहीं कर सकेंगे। यह एकमुश्त कार्यक्रम यूरोपीय संघ के धन से वित्तपोषित किया जा रहा है।

यह नीतिगत प्रतिक्रिया दिखाती है कि बाजार असंतुलन कितना आगे बढ़ चुका है और वह अब केवल व्यक्तिगत व्यवसायों तक सीमित नहीं है। कई जगहों पर मांग एक ही समय में कमजोर पड़ रही है, जबकि उत्पादकों पर ऊँची स्थिर लागत और तीव्र मूल्य प्रतिस्पर्धा का बोझ है।

पेय क्षेत्र के लिए, यह दिवालिया मामला एक सहकारी संस्था से आगे भी मायने रख सकता है। अगर और वाइन उत्पादक इसी तरह के दबाव में आते हैं, तो घटती समग्र खपत के बीच भी वाइन व्यापार के कुछ हिस्सों में आपूर्ति संबंध, स्थानीय वितरण और मूल्य निर्धारण प्रभावित हो सकते हैं। यह मामला उन कंपनियों पर दबाव भी बढ़ाता है जो वाइन के साथ बीयर, स्पिरिट्स और अन्य पेय बेचती हैं, क्योंकि एक श्रेणी में घटती मांग व्यापक पेय बाजार में शेल्फ स्पेस, खरीद निर्णयों और मार्जिन को बदल सकती है।

लेकिन Habitat Weine में फिलहाल मुद्दा इससे भी बुनियादी है। सहकारी संस्था अभी उपलब्ध बचा हुआ स्टॉक बेचते रहने की कोशिश कर रही है, जबकि अस्थायी दिवालिया प्रक्रिया जारी है। कारोबार को बचाया जा सकता है, पुनर्गठित किया जा सकता है या किसी अन्य रूप में स्थानांतरित किया जा सकता है या नहीं, यह अभी तय नहीं हुआ है।